Literacy for a Billion

Movie: Mere Sanam
Year: 1965

Song: Yeh Hai Reshmi Zulfon Ka
Lyricist: Majrooh Sultanpuri

ये है रेशमी
जुल्फ़ों का अँधेरा
ना घबराइए
जहाँ तक महक है
मेरे गेसुओं की
चले आइए
ये है रेशमी
जुल्फ़ों का अँधेरा
ना घबराइए
जहाँ तक महक है
मेरे गेसुओं की
चले आइए
ये है रेशमी
जुल्फ़ों का अँधेरा
ना घबराइए
जहाँ तक महक है
मेरे गेसुओं की
चले आइए
सुनिए तो ज़रा
जो हक़ीक़त है
कहते हैं हम
खुलते रुकते
इन रंगीं लबों की क़सम
जल उठेंगे दीए
जुगनुओं की तरह
जल उठेंगे दीए
जुगनुओं की तरह
जी तबस्सुम तो फ़रमाइए
हाँ ...
ये है रेशमी
जुल्फ़ों का अँधेरा
ना घबराइए
जहाँ तक महक है
मेरे गेसुओं की
चले आइए
प्यासी है नज़र
हाँ ...
ये भी कहने की
है बात क्या
तुम हो मेहमाँ
तो ना ठहरेगी
ये रात क्या
रात जाए रहे
आप दिल में मेरे
रात जाए रहे
आप दिल में मेरे
अरमाँ बनके रह जाइए
हाँ ...
ये है रेशमी
जुल्फ़ों का अँधेरा
ना घबराइए
जहाँ तक महक है
मेरे गेसुओं की
चले आइए

Disclaimer: PlanetRead does not own these lyrics and is not using them for any commercial purpose. For over 20 years, PlanetRead has been subtitling Bollywood songs for mass literacy. These lyrics are being offered as part of PlanetRead's literacy development initiative.

PlanetRead is a tax-exempt, not-for-profit: 501(c) (3) in the United States and 80(G) in India.